स्वतंत्रता संग्राम में सावरकर बन्धुओं का योगदान

डॉ. ज्योति सिंह
सहायक प्राध्यापिका
तुलनात्मक साहित्य विभाग
सूरत
jyotisinghnik195@gmail.com
सं० सूत्र -7206536258

प्रस्तावना :

'स्वतंत्रता संग्राम में सावरकर बन्धुओं का योगदान' नामक शोधालेख लिखने के पीछे का उद्देश्य सावरकर बन्धुओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करना है। इसके साथ ही युवा पीढ़ी में कर्त्तव्य बोध का भाव जगाना है। उनमें मौलिक अधिकार के प्रति जागरूकता तो है लेकिन मौलिक कर्त्तव्य का भान नहीं है। तभी तो अग्निवीरों जैसे युवाओं में क्षणिक सुख या स्वार्थ की भावना अत्यंत प्रबल होती है; जिससे वे राष्ट्रीय सम्पत्ति को अग्नि के हवाले करने से झिझकते नहीं हैं। अतः अग्निवीरों जैसे आज के युवाओं में राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव का बीजारोपण हो इसकी की चेष्टा की गई है। यह भी बताने का प्रयास किया गया है कि भौतिक सुख ही सब कुछ नहीं होता है ; इससे ऊपर उठकर इन बन्धुओं की तरह जीवन जीने की आवश्यकता भी होती है , त्याग में ही सबसे बड़ा सुख होता है ; इसलिए तो हम सबको बचपन से सिखाया जाता रहा है कि

'देश हमें देता है सब कुछ , हम भी तो कुछ देना सीखे।'1 (गीत - गुंजन)

वस्तुतः इस शोधालेख के माध्यम से अपने सशक्त इतिहास के स्वर्णिम पन्नों से अपने वर्तमान को सुदृढ़ करके अपने राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य का निमार्ण किया जाएगा और यही इसका एक मात्र उद्देश्य है।

भूमिका :

अर्थात् 'रत्नाकर समुद्र जिसका पादप्रक्षालन करते हैं हिमालय पर्वत जिसका किरीट है , ब्रह्मर्षियों रुपी रत्नों से जो समृद्ध है,ऐसी भारत माता को मैं प्रणाम करता हूँ।'

ऐसे प्राकृतिक और सांस्कृतिक सम्पदाओं से सुसज्जित भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा जाना किसी भी संतान के लिए असहनीय होगा। यही कारण है कि जब से भारत माता को सोने की चिड़िया समझकर बाहरी आक्रांताओं ने उसके पंखों को नोंचना - खसोटना प्रारम्भ किया है, तब से ही भारत माता की अनगिनत संतानों ने प्रतिकार व संघर्ष करते हुए अपने प्राणों का उत्सर्ग करना प्रारम्भ कर दिया था। वे ऐसा करते भी क्यों नहीं, बाल्यावस्था से ही हमारे पूर्वजों ने एक ही मंत्र हमारे कानों में फूँका है, वह यह है कि ---

"भारतभूमि पर जन्म लिया है ध्येय सुनिश्चित स्मरण करें।
तरुण शक्ति तुम राष्ट्रभक्ति का जनमन में चैतन्य भरो।।"2 (संगठन गीत)

इसी अमृत मंत्र का पान करते हुए अनेक माताओं ने अपनी कोख , मांग और अपनी राखी को सुनी करती रहीं। जीजाबाई जैसी क्रान्तिकारी माताओं के कारण ही अनगिनत राजा - महाराजा वह चाहे छत्रपति शिवाजी हों या फिर महाराणा प्रताप , महाराजा रणजीत सिंह या महाराजा गुरुगोविन्द के अनगिनत सन्तान हों या फिर उनसे पूर्व महाराणा पृथ्वी राज चौहान इत्यादि हों , जिन्होंने हँसते -हँसते अपने प्राणों को स्वतंत्रता की बलि बेदी पर न्यौछावर कर दिया।

ऐसी अनगिनत माताएँ भारतवर्ष की धरा पर हैं ; उदाहरण स्वरुप चापेकर बन्धुओं की माता श्री को भारतीय माताओं की भावनाओं की प्रतिनिधि के रुप में देखा जा सकता है ; जब अपने दोनों भाईयों को दामोदर हरि चापेकर व बालकृष्ण हरि चापेकर के गिरफ्तार हो जाने के बाद वासुदेव हरि चापेकर अपनी माता जी से भारतमाता के चरणों में तीसरे पुष्प यानि स्वयं को अर्पित करने के लिए आग्रह करते हुए कहते हैं --- " माँ ! दो फूल तो रामाँ के काम आ गए , अब मैं भी उन्हीं के चरणों तक पहुँचने की आज्ञा लेने आया हूँ ! " उस समय माँ के मुख से एक शब्द भी न निकला। उसने बालक के मस्तक पर हाथ फेरते हुए उसका मुख चूम लिया।"3 (चाँद का फाँसी अंक सन् 1928 पृष्ठ संख्या - 246)

तो ऐसी होती हैं हमारी वीर माताएँ।

यहीं नहीं मुगलों के साथ ईस्ट इंडिया कम्पनी के बढ़ते हुए साम्राज्यवादी अत्याचार जब असह्य हो गए, तब अनेकों क्रान्तिकारियों ने कई प्रकार की क्रान्तियाँ समय - समय पर कीं ; उदाहरणस्वरूप निम्नलिखित घटनाक्रम को देखा जा सकता है ---

प्लासी का युद्ध (सन् 1757) , बंगाल का प्रथम सैनिक आन्दोलन (सन् 1764) , बक्सर का युद्ध (सन् 1764) , बंगाल का महाल आन्दोलन (सन् 1767), संन्यासी एवं फकीर आन्दोलन (सन् 1763- 1803 तक), बंगाल का द्वितीय सैनिक आन्दोलन (सन् 1795) , वेल्लौर का सैनिक आन्दोलन (सन् 1803), चुआड़ आन्दोलन (सन् 1798 से 1820 तक), नायक आन्दोलन (सन् 1821), वैरकपुर का प्रथम सैनिक आन्दोलन (सन् 1824), गुजरात का महीकांत आन्दोलन (सन् 1836),धरराव आन्दोलन (सन् 1841), कोल्हापुर आन्दोलन (सन् 1844) , संथाल आन्दोलन (सन् 1854 - 1855 तक) , नील आन्दोलन (सन् 1850 - 1860 तक), सन् 1855 का सैनिक आन्दोलन , प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (सन् 1857), कूका आन्दोलन(सन् 1872) इत्यादि। इसके साथ ही वासुदेव बलवंत फड़के का मुक्ति अभियान (सन् 1875 -1879) भी स्व के तंत्र की स्थापना करने में महत्त्वपूर्ण अभियान छेड़ रखा था। यही नहीं विदेशी भूमि अर्थात् अमेरिका , कनाड़ा , जापान, जर्मनी इत्यादि से क्रान्ति का शंखनाद भी किया गया।

इतनी सारी क्रान्तिकारी घटनाओं के कालचक्र की चर्चा करने के पीछे का मेरा मन्तव्य मात्र इतना ही बताना है कि भारतीय संतानों की धमनियों में इन्हीं क्रान्तिकारी पूर्वजों का रक्त प्रवाहित हो रहा है ; अतः एक ही परिवार से झुंड के झुंड बालक अपनी भारत माता की राजनीतिक व सामाजिक बेड़ियाँ काँटने के लिए तत्पर थे। परन्तु , स्वाधीनता के मद् में हमारे कुछ राजनेता उन सभी पवित्र आत्मों को स्मरण कर श्रद्धान्जली देने व स्वर्णिम इतिहास के पन्नों में सम्मानीय स्थान देना उचित नहीं समझा। उदाहरण स्वरुप - चापेकर बन्धु (दामोदर चापेकर , बालकृष्ण चापेकर , वासुदेव हरि चापेकर) , मिश्र बन्धु (गणेश बिहारी, श्याम बिहारी, शुकदेव बिहारी), साहिबजादे बन्धु गुरु गोविन्द सिंह के चारों पुत्र(अजित सिंह , बाबा जुझार सिंह , बाबा जोरावर सिंह , फतेह सिंह) जिनके स्मरण में 26 दिसम्बर 2021को वीर बाल दिवस मनाने की

घोषणा हमारे प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने की।, कोठारी बन्धु (राम कुमार , शरद कुमार) कारसेवा के दौरान पुलिस की गोली से मारे गए , जिनके नाम पर अयोध्या में सड़क का नाम रखने की घोषणा की गई।, सावरकर बन्धु (गणेश दामोदर सावरकर - बाबा राव ,विनायक दामोदर सावरकर , नारायण दामोदर सावरकर) काले पानी की कठोर सजा भुगतने वाले भाई इत्यादि। और भी कई ऐसे अज्ञात बन्धु होगें , परन्तु हमारा समाज सिर्फ प्लेन उड़ाने वाले राइटर्स ब्रदर्स (आरविल, विल्बर) को ही जानता है।

पर कोई बात नहीं अब हम सब स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर उन्मुख हो रहे हैं। साधारणतः तत्कालीन राजनीतिक संघर्ष को गरम दल और नरम दल में बाँटा गया था। परन्तु , वास्तव में वह स्व की अधीनता और स्व के तंत्र की बात थी। एक पक्ष सिर्फ सत्ता परिवर्तित करना चाहता था और दूसरा पक्ष स्व अर्थात् देशी या अपना तंत्र स्थापित करना चाहता था। सामाजिक एवं सांस्कृतिक उत्थान चाहता था। उल्लेखित बन्धुओं ने इसी उत्कृष्ट समाज का सपना देखा था और इसे धरातल पर उतारने के लिए स्वतंत्रता की मशाल भी जलाई थी ; भले ही इस मशाल को प्रज्वलित करने में इन बन्धुओं को कठोर संघर्ष का सामना करना पड़ा था , लेकिन कुछ राजनेताओं के सिद्धान्तों के प्रतिकूल होने के कारण उन्हें और उनकी कृतियों को रहस्यमयी कन्दराओं में छिपा दिया गया।

सावरकर बन्धुओं का राष्ट्र बोधत्व -

सावरकर बन्धुओं का जन्म जिस भूमि पर हुआ था , उस भूमि का क्रान्तिकारी महत्त्व है। महाराष्ट्र के चित्तपावन ब्राह्मण वंश में अनेकों राष्ट्र - भक्तों अवतरित हो चुके थे। जिसका उल्लेख गत अध्याय में किया जा चुका है।

बाल्यावस्था से ही राष्ट्रीयता के भाव - बोध उनके रग - रग में रचा बसा था। तभी तो प्रतिकूल परिस्थिति होने के बाद भी सर्वदा राष्ट्र ही सर्वोपरि रहा।

वैसे भी सावरकर बन्धुओं के परिवार में चापेकर बन्धुओं तथा अन्य क्रांतिकारियों के व्यक्तित्व व कृतित्व का प्रभाव रहा है। तभी तो गणेश , दामोदर नाम चापेकर - बंधुओं के परिवार में था। चित्तपावन वंश परम्परा में लगभग सभी महानुभावों के घर में विनायक और दामोदर नामक नामकरण होता ही था।

सबसे बड़े भाई गणेश दामोदर सावरकर को आदर से बापू राव कहा जाता था। मझले भाई विनायक दामोदर सावकर, जिन्हें बचपन में तात्या तथा किशोरावस्था में साहसिक कार्यों के करने के कारण वीर सावरकर कहा जाता था , छोटे भाई डॉ० नारायण दामोदर सावरकर को बाल के रुप में जाना जाता था। छोटी बहन का नाम मैना देवी था।

माता - पिता के देहांत के पश्चात बड़े भाई व भाभी अपने अनुजों का लालन - पालन पुत्रवत किये , साथ ही उनका विवाह संस्कार भी सम्पन्न करवाएँ । संगठित होकर न सिर्फ अपने गृहस्थी को वे लोग संभाले

,अपितु राष्ट्रहित में सावरकर दाम्पत्य अपने जीवन को खपा दिये। न सिर्फ गणेश दामोदर सावरकर अपनी धर्मपत्नी को राष्ट्रहित में समर्पित होने का उपदेश देते हैं , अपितु अपने बड़े भाई की गिरफ्तारी के बाद वीर सावरकर भी अपनी भाभी को सांत्वना देते हुए कई पत्र लिखते हैं ; उदाहरणस्वरुप एक पत्र को देखा जा सकता है ---" गजेंद्र की सूंड से भगवान के चरणों में समर्पित कमल जड़ से उखड़ जाने पर भी अमर हो जाता है। इसी प्रकार हम तीनों भाई भी जन्मभूमि के चरणों में समर्पित होकर मोक्ष को प्राप्त हो जाएंगे।"4(संपा. भवान सिंह राणा , भारत के अमर क्रांतिकारी वीर सावरकर प्रकाशक - डायमंड पब्लिकेशन पृ० सं०26)

यही नहीं ब्रिस्टन जेल से भी उन्होंने अपनी अन्तिम मृत्यु पत्र के रुप में अपनी भाभी श्री को संबोधित करते हुए लिखा था -- " मातृभूमि ! तेरे चरणों में मैं अपना मन अर्पित कर चुका हूँ। मेरा वक्तृत्व , वाग्वैभव, मेरी नई कविता सभी कुछ तेरे चरणों में समर्पित है। .....वंश चाहे अखंड हो या न हो , परंतु मातृभूमि हमारे उद्देश्य पूर्ण हों। माता के बंधन तोड़ने के लिए हम प्रज्वलित अग्नि में अपना सर्वस्व जलाकर कृतार्थ हो गए। पूज्या भाभी ! समझ लो इसी में हमारे वंश की सफलता है। पार्वती ने हिमालय की चोटियों पर तप किया है तथा कई राजपूत रमणियों ने हँसते - हँसते प्राणों की आहुति दे दी है। भारतीय ललनाओं में वह तेज - बल आज भी नष्ट नहीं हुआ है ...।" 5

(संपा. भवान सिंह राणा , भारत के अमर क्रांतिकारी वीर सावरकर प्रकाशक - डायमंड पब्लिकेशन पृ० सं०26)

इसके साथ ही उनके उस पत्र पर भी दृष्टि डाल लेनी चाहिए, जिसे उन्होंने अपनी पत्नी को डोंगरी जेल से अंडमान जाने से पूर्व लिखा था -" चिंता न करो। यदि ईश्वर की कृपा हुई तो पुनः अवश्य भेंट होगी तब तक यदि सामान्य संसार का भय सताने लगे, तो ऐसा विचार करो कि बेटे- बेटियों की संख्या बढ़ाना तथा चार तिनके जमा करके घर बांधना ही यदि संसार कहलाता है, तो ऐसा संसार तो कौए ,चिड़ियाँ भी बसाती रहती हैं। परंतु, यदि परिवार का उदार अर्थ मानव परिवार लेना हो , तो उसे सजाने में तो हम पूर्ण सफल हुए हैं। माना कि अपना सुखी जीवन हमने अपने ही हाथों ध्वस्त कर डाला। परंतु, भविष्य में सहस्त्रों घरों में सुख की वर्षा होगी। क्या तब हमें अपना बलिदान सार्थक न लगेगा? सुखी संसार की कल्पना करने वाले अनेक लोग प्लेग के शिकार बन जाते हैं, उनका घर दीपक विहीन हो जाता है। विवाह मंडप तक से पति-पत्नी को कॉल दबोच कर ले जाता है। अतः संकटों का सामना करना सीखो और धैर्य रखो । "6 (संपा. भवान सिंह राणा , भारत के अमर क्रांतिकारी वीर सावरकर प्रकाशक - डायमंड पब्लिकेशन पृ० सं०30)

प्रत्युत्तर देते हुए उनकी धर्म पत्नी ने कहा "आप चिंता न करें। मेरे लिए क्या यही कम सुख की बात है कि मेरा वीर पति मातृभूमि की सेवा के लिए कठोर साधना कर रहा है।" 7 (संपा. भवान सिंह राणा , भारत के अमर क्रांतिकारी वीर सावरकर प्रकाशक - डायमंड पब्लिकेशन पृ० सं०30)
ऐसी साक्षात क्रान्ति स्वरुपा अर्धांगिनी के कारण सावरकर बन्धु अपना सर्वस्व बलिदान कर सके।

ऐसी सहधर्मिणी , पिता तुल्य भाई व ममतामयी भाभी , लक्ष्मण तुल्य अनुज के सानिध्य में ही वीर सावरकर जी देशी व विदेशी भूमि पर भारत माता की बेड़ियों से मुक्ति का अभियान चला सके।
इसी क्रम में उनके वे सभी मित्र भी हाथ देते थे , जो तरुण भारत , मित्र मेला ,अभिनव भारत इत्यादि संस्थाओं में राष्ट्र हित में शपथ ले चुके थे। हिन्दू स्वराज का जो स्वप्न प्रताप व शिवाजी ने देखा था, उसी स्वप्न को पूर्ण करने के लिए चापेकर बन्धुओं , बाल गंगाधर तिलक ,भीकाजी कामा , मदनलाल धींगरा , श्यामजीकृष्ण वर्मा इत्यादि के साथ उनके मित्र गण भी बढ़ - चढ़कर भागीदारी करते थे। अंग्रेजी सरकार वीर सावरकर की कई पुस्तकों के साथ अप्रकाशित पुस्तक "सन्1857 का स्वातंत्र्य महासमर " को प्रतिबंधित कर दी थी। ऐसे कठिन समय में इंग्लैण्ड से इस पाण्डुलिपि को सुरक्षित भारतवर्ष तक लाना और प्रकाशित करना अपने आप में अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य था। परन्तु ,गणेश सावरकर जी अंग्रेजों के नाक के नीचे ही इस पाण्डुलिपि को प्रकाशित करने की व्यवस्था किये। लेकिन, अंग्रेजी जासूसों की घ्रांण शक्ति भी कुछ कम तेज नहीं थी, कहीं न कहीं से सूँघ ही लेते थे। फिर भी सावरकर बन्धुओं ने भी यह सिद्ध कर दिया कि तुम डाल - डाल तो हम पात - पात।
चापेकर बन्धुओं को आदर्श मानने वाले सावरकर बन्धुओं ने सांस्कृतिक व राष्ट्रवाद को सुदृढ़ करके न सिर्फ सनातनी जातीय चेतना को जागृत किया , अपितु तंत्रात्मक व्यवस्था को प्रतिस्थापित करने का अनुक्रम भी किया। क्रान्तिकारियों के लिए प्लेग कमिश्नर मि० रेण्ड की हत्या एक प्रेरक घटना बन गई थी। यही कारण था गणेश सावरकर 'तरुण भारत ' नामक संस्था के माध्यम से सशक्त क्रान्ति करने के लिए युवकों को प्रेरित करते थे।इसके साथ ही क्रान्तिकारी व उद्बोधनात्मक साहित्य भी रचा करते थे , जिसे अपराधात्मक श्रेणी में डालकर मुकदमा चलाया गया और पूर्व निर्धारित सजा 'काला पानी ' दे दिया गया। 'काला पानी' जैसे भयंकर सजा क्या उद्बोधनात्मक साहित्य रचने के लिए दिया गया ?
जी नहीं ! वीर सावरकर की शक्ति को क्षीण करने के लिए ही गणेश सावरकर और नारायण सावरकर को काल कोठरी में बन्द कर दिया गया। किसी भी अपराध में लिप्त न होने के बावजूद वीर सावरकर को उनके राष्ट्रवादी नीतियों के कारण दो जन्मों अर्थात् पचास वर्षों की काले पानी की सजा दी गई। इस प्रकार का कठोर दण्ड देकर इनके संगठन को , इनके हौसलें को , इनकी कार्य पद्धति को तोड़ने का षड़यंत्र किया गया।

कुछ कांग्रेसी नेताओं के समान सावरकर बन्धुओं ने अँग्रेजों के स्वर में स्वर नहीं मिलाया , और तो और गाँधीजी के ढुल - मुल राजनीति को पूर्ण रुप से नकार दिया। इन बन्धुओं ने न सिर्फ स्व अर्थात् अपनी सामाजिक तंत्रात्मक व्यवस्था की सुगमता के लिए डॉ० केशव बलिराव हेडगवार जी के साथ मिलकर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना किये , अपितु अखण्ड भारतवर्ष को स्थापित करने का संकल्प भी लिए। यही नहीं अग्रज बन्धु समाज सेवी तथा दोनों अनुज बन्धु क्रमशः वकील और डॉक्टर के रुप में भारत माता के सहस्र संतानों में सामाजिक समरसता लाने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा दिये। अपने जीवन के अन्तिम चरण में रत्नागिरी से भारतवर्ष के कोने - कोने में सनातन धर्म व कर्त्तव्यों की वास्तविक परिभाषा की व्याख्या देते थे। इस कार्य हेतु उन्होंने न सिर्फ अछूतों के लिए मन्दिर की स्थापना किये , अपितु अन्तःजातीय व अन्तःप्रान्तीय विवाह के लिए समाज को प्रेरित भी किये। उनके निःस्वार्थ और निश्छल भाव को निम्नलिखित पत्र में देख सकते हैं , जिसे उन्होंने (वीर सावरकर) अपने अनुज डॉ० नारायण दामोदर सावरकर तथा उनकी धर्म पत्नी शान्ता को उनके परिणय सूत्र में बन्धने पर लिखा था। इस पत्र से डॉ० नारायण के चरित्र का दो स्वरुप दिखता है ; एक में उनके कठोर पौरुष व क्रान्तिकारी तथा दूसरे में निर्मल व समाज सेवी भाव के दर्शन होते हैं। पत्र थोड़ा लम्बा है , लेकिन संदर्भ के लिए देना अत्यंत आवश्यक है। --- " प्रिय बाल तथा सौ. शान्ता , तुम्हारे जीवन की दूसरी अवस्था अर्थात् दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में मैं तथा बड़े भाई तुम दोनों को हार्दिक बधाई देते हैं। तुमने अपनी प्रथम अवस्था के कर्त्तव्यों तथा उत्तरदायित्वों का पूर्णतया निर्वाह किया है। जब हमारी मातृभूमि पर तूफान उमड़ रहा था , तब तुम अपने निश्चित स्थान पर निश्चल और निर्विकार डटे रहे। तूफान आया, किन्तु तुम निर्भय और सच्चे रहे। कई द्रोहियों के बीच में रहकर भी तुम सत्यपरायण बने रहे। जिसे अपने नव युवकों में जागृत करने के लिए यूरोप में आयरन क्रॉस और विक्टोरिया क्रॉस आदि सम्मानों का प्रलोभन रखा था, उस उत्साह और विश्वास का तुमने परिचय दिया। तुमने जनता द्वारा मिलने वाली प्रशंसा के पुरस्कार को त्याग दिया , अतः मैं कहता हूँ कि तुमने जीवन की प्रथम अवस्था पूर्ण एवं श्रेष्ठ प्रकार से व्यतीत की। प्रिय बाल!और शान्ता ! अब तुम जीवन की सुखमय और श्रेष्ठ अवस्था दाम्पत्य जीवन में पदार्पण कर रहे हो! प्रिय बाल! तुम्हारा पथ गुलाबों से आच्छादित रहे और प्रिय शान्ता तेरा यौवन अमर स्वर्ण में विकसित हो।"8(संपा. भवान सिंह राणा , भारत के अमर क्रांतिकारी वीर सावरकर प्रकाशक - डायमंड पब्लिकेशन पृ० सं० 49)

शुभकामनाओं से भरे इस पत्र में वीर सावरकर जी तत्कालीन समाज में फैली कुप्रथाओं का उल्लेख करना नहीं भूलते हैं कि किस प्रकार बाल विवाह और स्व जाति में बन्धकर अपने यशस्वी समाज को नष्ट किया जा रहा है। उनके शब्दों में देखना प्रभावकारी होगा --" मैं वह समय देखने का अभिलाषी हूँ ,जब हिन्दुओं में अन्तः प्रान्तीय विवाह होने लगेंगे तथा पन्थों और जातियों की दीवार टूट जाएगी। हमारे हिन्दू जीवन की विशाल सरिता समस्त दलदलों एवं मरूस्थलों को पार करके सदा शक्तिमान एवं पवित्र प्रवाह से प्रवाहित

होगी।....इस सम्बन्ध में सर्वप्रथम जो कुछ करना है, वह है प्रेम को विवाह सम्बन्ध में सर्वोपरि विशेष स्थान और अधिकार देना। इस तथ्य से हमें आँखें नहीं मूंदनी नहीं चाहिए कि इस समय हम लोग पशुओं और पक्षियों की नस्ल सुधारने के लिए तो विशेष ध्यान देते हैं , किन्तु मनुष्य की सुप्रजा जनन की ओर नहीं।.....।" 9 (संपा. भवान सिंह राणा , भारत के अमर क्रांतिकारी वीर सावरकर प्रकाशक - डायमंड पब्लिकेशन पृ० सं० 49)

अब जरा गणेश दामोदर सावरकर के भाव को भी देख लेना चाहिए, जब दोनों भाईयों का मूक मिलन होता है। लंडन में बैरिस्टरी पढ़ रहे पुत्रवत अनुज को पितातुल्य भ्राता अण्डमान के सेलूलर जेल में देखकर विचलित हो जाते हैं , कई प्रकार से प्रयास करने के पश्चात् अपनी भावनाओं को गुप्तरुप से पत्राचार के माध्यम से उनके पास पहुँचाते हैं , जिसके मुख्य अंश को अवश्य ही देख लेना चाहिए --

" प्रिय तात्या ! तुम बाहर रहकर मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए कार्य करोगे मुझे ऐसी आशा थी। उस आशा के बल पर मैं अपने कालापानी के दंड को प्रसन्नता से भोग रहा था। मन उन कष्टों को तुच्छ मानता था। हम दोनों भाई तो जेलों में बंद कर दिए गए और केवल तुम ही बाहर रहकर मातृभूमि की आराधना में लीन हो, यही कल्पना मुझे धीरज देती थी। कष्ट की सफलता साकार करती थी। किन्तु तुम पेरिस में कार्य करते - करते इनके हाथों न जाने कैसे पड़ गये। अब उस क्रान्ति ज्योति को कौन जलाएगा ? और 'बाल ' अपना बाल' और किसका मुँह ताकेगा? मैंने तुम्हें प्रत्यक्ष देखा है, फिर भी विश्वास नहीं होता - हाय ! ओह! तुम यहाँ कैसे आये? "10 (संपा. भवान सिंह राणा , भारत के अमर क्रांतिकारी वीर सावरकर प्रकाशक - डायमंड पब्लिकेशन पृ० सं० 41)

इसके प्रत्युत्तर में वीर सावरकर जी लिखते हैं --

" लौकिक तथा भाग्योदय की राख शरीर में मलकर जूझते रह जाना, यही तो अलौकिक भाग्य है। तो फिर दुःख क्यो? .... मैं समझता हूँ कि उसी कसौटी पर हम सब खरे उतरे हैं। संकटों का सामना करना , कारागृह में सड़ते रहना , जिसके लिए इतने कष्ट सहन किये , उनके शाप से मरते रहना , यही सब अपने जीवन का ध्येय है। यह उतना ही महान है , जितना कि बाहर रहकर कीर्ति तथा दुन्दुभियों के ताल पर जूझते रहना तथा दुन्दुभियों की ध्वनि का निनादित होना जितना आवश्यक माना जाता है , उतना ही कन्दराओं में बन्दीगृह में कराहते रहना तथा अज्ञात स्वरुप में प्राणोत्क्रमण करना आवश्यक माना जाता है।"11 (संपा. भवान सिंह राणा , भारत के अमर क्रांतिकारी वीर सावरकर प्रकाशक - डायमंड पब्लिकेशन पृ० सं० 41-42)

इस प्रकार के पत्राचार को देखकर यही कहा जा सकता है कि सावरकर बन्धुओं के जीवन का लक्ष्य स्वयं को जलाकर दूसरों को ज्ञानरुपी प्रकाश देना था। कथनी व करनी में कोई भेद नहीं था। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि राष्ट्रवादी कवि दिनकर जी की 'रोटी और स्वाधीनता ' काव्य की प्रत्येक पंक्तियाँ सावरकर बन्धुओं के लिए ही समर्पित की गई है।

सावरकर बन्धुओं के जीवन के एक और पन्ने को पत्र के रुप में देखना अत्यंत आवश्यक है, जिसे उन्होंने अग्रज की भूमिका निभाते हुए लिखा था जब डोंगरी जेल में उनके छोटे भाई डॉ. नारायण सावरकर को लॉर्ड मिंटो पर बम फेंकने के आरोप में बंदी बनाया गया। पत्र कुछ इस प्रकार है --

" तुम मेरे विषय में बिल्कुल चिंता न करना , और न मन को खिन्न करना। वाष्प यंत्र को प्रेरणा देने के लिए अपने देह का ईंधन बनाकर यदि किसी को जलते रहना है, तो वह स्थान हमें ही क्यों न प्राप्त हो। जलते रहना भी तो एक कर्म है। इतना ही नहीं एक महान कर्म है।" 12 (संपा. भवान सिंह राणा , भारत के अमर क्रांतिकारी वीर सावरकर प्रकाशक - डायमंड पब्लिकेशन पृ०सं० 31)

ऐसे असंख्य पत्र भरे पड़े हैं जिसे उन्होंने अपने परिवार के अन्य सदस्यों को तथा क्रान्तिकारी बन्धुओं को लिखा था। शब्द सीमा होने के कारण कुछ ही पत्रों को विषय साक्ष्य के रुप में दिया गया।

उपुर्यक्त पत्राचार से यह तो सिद्ध हो ही जाता है कि न सिर्फ सावरकर बन्धु अपितु पूरा परिवार ही स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपने प्राणों को आहुत करने के लिए तत्पर हैं। ऐसे परिवार को , ऐसे बन्धुओं के क्रिया कलापों को जनमानस तक पहुँचाना क्या हमारा कर्त्तव्य नहीं है ?

निष्कर्षतः

कहा जा सकता है कि स्वतंत्रा संग्राम में सावरकर बन्धुओं की भूमिका किसी इतिहास की पुस्तक में नहीं मिलेगी और यदि किसी पुस्तक में कुछ मिल भी जाए तो यही कहा जाएगा कि किसी समर्थक ने लिखा है। इसीलिए इस शोधालेख को लिखने के लिए मैंने इन बन्धुओं के व्यक्तिगत पत्रों को आधार बनाया है। किसी के पारिवारिक पत्रों में किसी प्रकार की राजनीतिक प्रेरणा नहीं होती है । परन्तु जो परिवार अपने राष्ट्र के लिए ही अपना तन , मन, धन सर्वस्व अर्पण कर चुका हो तो उसके लिए उनका जीवन समिधा होता है और वे राष्ट्र हित के लिए राजनीतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों को सुदृढ़ करना चाहते है। इसके साथ ही इसके लिए अपने कई पीढ़ियों को स्वाहा भी कर देते हैं।

अस्तु।